खण्ड–8, अंक–1, वर्ष–2020 वैज्ञानिक आलेख
D.O.I.: 10.22445/avsp.v8i1.26

जीवन रक्षक वन–एक विश्लेषण

ए. के. चतुर्वेदी

26, कावेरी एन्क्लेव फेज–दो, समीप स्वर्णजयन्ती नगर, रामघाट रोड, अलीगढ़–202 001, उ.प्र., भारत

प्राप्ति तिथि–26.08.2020, स्वीकृति तिथि–25.11.2020

सार– पेड़–पौधे जैविक पारिस्थितिक तन्त्र के महत्वपूर्ण घटक हैं। पेड़–पौधे जीवधारियों व प्राणियों के विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा उनका आपस में घनिष्ट सम्बन्ध हैं तथा दोनों एक दूसरे के लिए अत्यावश्यक हैं। औद्योगिक विकास के कारण वन प्रदेश अत्यन्त कम होता जा रहा है जिससे सम्पूर्ण जैवविविधता प्रभावित हो रही है। प्रस्तुत लेख में वनों के महत्व व उनके संरक्षण के महत्वपूर्ण उपायों का विवेचन किया गया है।

बीज शब्द– वन सम्पदा, वन संरक्षण, जैवविविधता

Life Protector Forest–An Analysis

A. K. Chaturvedi

26, Kaveri Anclave, Phase-2, Near Swarn Jayanti Nagar, Ramghat Road, Aligarh-202 001, UP

Abstract- Plants are the important components of biosphere. Plants essential for sustenance of animals and have intricate relationship and both are inevitable for each other. Uncontrolled industrial development led to drastic depletion of forest cover which adversely affects the Biodiversity. Present article deals with importance of forest cover as well as strategies for conservation of forest cover.

Key words- Biodiversity, Forest conservation, Forest resource

1. परिचय

आंग्ल भाषा में वन को फॉरेस्ट कहते हैं। फॉरेस्ट शब्द लैटिन भाषा के शब्द "फोरिस" से लिया गया है। इसका अर्थ है– "दरवाजे से बाहर"। हिन्दी में पेड़ों के समूह को वन कहते हैं। समूह में अधिक पेड़ होने पर सघन वन कहलाता है। वन प्रकृति का उत्कृष्ट उपहार है। मान्यता है कि हजारों सदियों पहले पृथ्वी आग का गोला थी जो धीरे–धीरे ठन्डी होकर कठोर, अनिष्ठ, उबड़–खाबड़ बनी। पृथ्वी पर जीवन सर्वप्रथम जलीय पौधों द्वारा उत्पन्न हुआ। फिर एक कोषीय जीव प्रोटोजोआ, बहुकोषीय सीलन ट्रेटा, एम्फीबिया, रेपटायल, बर्ड, मेमल्स आये। इसी प्रकार पौधे भी एल्गी, फन्जाई, ब्रायोफाइट, टेरीडोफाइड और जिम्नोस्पर्म आये। जीव और पौधों का जीवन एक दूसरे पर निर्भर है। मनुष्य का अस्तित्व, जीवन, जीव और पौधों के अस्तित्व और जीवन पर निर्भर है। पेड़ों ने हरित होने के कारण पृथ्वी को जीवन देने वाला ग्रह बनाया। जो वनों से परिपूर्ण थी। इस प्रकार फोना बना। पृथ्वी पर जीवन प्रारम्भ हुआ। वनों ने मनुष्य की उत्पत्ति को देखा ही नहीं वरन् जीवन को आगे बढाने में सक्रिय पूर्ण योगदान दिया। वनों का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। मनुष्य ओर पेड़–पौधे एक–दूसरे के पूरक हैं। वनों की रक्षा करना परम कर्तव्य ही नहीं अपितु आवश्यक है। आज परिस्थितियाँ बदल गयी हैं। जनसंख्या विस्फोट, शहरीकरण, औद्योगिक क्रान्ति, आवागमन के साधन रेल और सड़कों का जाल फैलाने के कारण वनों की कटाई अत्यधिक की जा रही है। जीवन को सुखमय और आनन्ददायक बनाने के लिए विकास किया जा रहा है। इस विकास के कारण परोक्ष रूप में विनाश हो रहा है। पहले अफ्रीका को अन्धा राष्ट्र कहा जाता था क्योंकि वहाँ सघन वन थे। जहाँ दिन में भी सूर्य का प्रकाश पहुँच नहीं पाता था। आज विकास के नाम पर सघन वनों को काट दिया गया है। वनों का दोहन और विनाश अधिक हो रहा है। आज वन मनुष्य की दया पर निर्भर है। यह स्थिति अत्यन्त दयनीय है।

Corresponding Author: ajaychaturvedi188@gmail.com

आज विश्व में वनों का क्षेत्रफल निरंतर कम होता जा रहा है। भारत भी इससे अछूता नहीं है। विश्व के वनों के क्षेत्रफल का 1 प्रतिशत भाग भारत में स्थित है जो बहुत ही कम है। वैसे भारत में वनों का क्षेत्रफल 19 प्रतिशत है जो राष्ट्र के क्षेत्रफल तथा आबादी के अनुपात में बहुत ही कम है। वनों का विनाश अपने स्वार्थ में विकास के नाम पर मनुष्यों द्वारा किया जा रहा है। वन प्रकृति में सामन्जस्य जीव–जन्तुओं से करता है। जिससे छोटे से छोटे सूक्ष्मजीवों से लेकर बड़े पेड़–पौधे, जीव–जन्तु आपस में सह अस्तित्व के सिद्धांत का पालन करते हैं। जिससे एक दूसरे की सहायता होती है तथा दोनों का जीवन चलता है। प्राकृतिक सामन्जस्य को ही ईकोसिस्टम कहते हैं। जब तक यह ठीक रहता है, जीवन चलता है। परन्तु सामन्जस्य में गड़बड़ी आने पर इको सिस्टम असामान्य हो जाता है। इससे कुछ जीव, पेड़ों का जीवन संकट में पड़ जाता है।

2. वनों का महत्व

वनों का क्षेत्रफल कम होने और समाप्त होने पर कुछ पेड़ों और जीवों की प्रजातियों का समाप्त होना स्वाभाविक है। इतना ही नहीं पर्यावरण पर भी दुष्परिणाम दृष्टिगोचर होते हैं। वर्षा का कम या अधिक होना, असमय होना, गर्मी अधिक पड़ना, नदियों में बाढ़ आना, सूखा पड़ना, फसल का उत्पादन कम होना, नई–नई बीमारियों से ग्रस्त होना, मौसम में परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन होना आम बात हो गयी है। जीवन में व्यस्तता, भागदौड़, आपाधापी बहुत बढ़ गई है और इससे स्थिरता कम हुई है। जीवन में खुशहाली, संतुष्टि कम हो रही है। हर समय स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ गया है तथा बढ़ता ही जा रहा है। मनुष्य के जीवन में वनों का विशेष महत्व है। वन मनुष्यों को ईंधन, खाना, दवाईयाँ, रबड़, शहद, धागा, पशुओं के लिए चारा प्राप्त होता है। वनों से लकड़ी भी प्राप्त होती है जो फर्नीचर बनाने में काम आती है। वनों के द्वारा ही पेट्रोलियम और कोयला बनता है। वन में उपस्थित पेड़–पौधे प्राण वायु ऑक्सीजन देते हैं जो सभी के लिए अति आवश्यक है। इसीलिए वनों को पृथ्वी का फेफड़ा कहते हैं। वन में विभिन्न पेड़–पौधे, जीव–जन्तु पाये जाते हैं। आज भी वनों में कुछ आदिवासी जन–जातियाँ निवास करती हैं। वन पृथ्वी पर जीवन का आधार हैं जिनके द्वारा प्रदत्त इंकोलॉजीकल सेवा अनूठी है। वन बहुमूल्य सम्पदा है जो जैवविविधता का घर है। वन वर्षा को आमन्त्रित तथा नियंत्रित भी करते हैं तथा अधिक वर्षा के कारक भी बनते हैं। वन वातावरण से विषैली गैस कार्बन–डाई–ऑक्साइड का शोषण कर पर्यावरण को शुद्ध रखता है। वन पॉल्यूटेन्ट के लिए स्पन्ज का काम करते हैं। वनों की अधिकता होने पर पर्यावरण शुद्ध होगा तथा मौसम संतुलित होगा व फसलों का उत्पादन अधिक होगा। सभी जंगली जानवरों के लिए वन नितांत सुरक्षित प्राकृतिक आवास है।[1]

3. वनों के घटने का दुष्परिणाम

सुख–सुविधाओं को बढ़ाने के लिए, जीवन स्तर को ऊँचा करने के लिए विकास के नाम पर अत्यधिक, अनियंत्रित औद्योगीकरण हो रहा है। जनसंख्या विस्फोट और सुरक्षा की दृष्टि से शहरीकरण बढ़ता ही जा रहा है। आवागमन का दबाव बढ़ने से रेल एवं सड़कों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है। सड़कों का चौड़ीकरण और नये एक्सप्रेसवे, नये हाइवे बनने के कारण भी वनों तथा पेड़ों का कटान हो रहा है। कागज की मांग भी बहुत बढ़ी है जो कि वनों से प्राप्त लकड़ी का उपयोग करके ही बनाया जाता है जिससे बड़े स्तर पर वनों का विनाश हो रहा है। अन्न की मात्रा बढ़ाने के लिए रासायनिक उर्वरकों की अत्यधिक मात्रा का उपयोग किया गया जिससे पृथ्वी की उत्पादकता क्षमता कम हो रही है। पृथ्वी के आवश्यक न्यूट्रीएन्टस कम हो रहे हैं।

जनसंख्या बढ़ने से रेफ्रीजरेटरों, एयरकंडीशनरों की संख्या भी बढ़ी है जिससे ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा में वृद्धि हुई है जो ग्लोबल वार्मिंग के लिए उत्तरदायी है। वनों के कम होने से कोयला की मात्रा भी धीरे–धीरे घट रही है जोकि विद्युत उत्पादन के लिए भारत में विशेष स्रोत है। जीव–जन्तुओं के रहने के स्थान समाप्त होने से जन्तु आबादी में आकर फसलों को बर्बाद कर रहे हैं तथा जान–माल की हानि पहुँचा रहे हैं और जिसके चलते इकोसिस्टम के साथ मनुष्य का सामन्जस्य बिगड़ गया है। पर्यावरण के प्रदूषित होने से अम्लीय वर्षा की सम्भावना बढ़ गई है जिसके प्रभाव के चलते हरियाली समाप्त होती है। इसके साथ ही ऐतिहासिक धरोहरों को भी हानि उठानी पड़ रही है। भवन कमजोर हो रहे हैं। इसका देशाटन पर प्रतिकूल प्रभाव होगा। ग्लोबल वार्मिंग के कारण तापमान अधिक हो रहा है। इससे वनों में आग स्वतः लग रही है जो अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न कर रहे हैं। वन तो तेजी के साथ समाप्त हो रहे हें तथा इसके चलते पर्यावरणीय समस्याएँ भी उत्पन्न हो रही हैं।[2]

वनों की कटाई से भू–स्खलन, कटाव की समस्या बढ़ती जा रही है। प्रकृति में असंतुलन बढ़ने से प्राकृतिक आपदायें आना स्वाभाविक है। भूकम्प आना, पहाड़ों पर बादलों का फटना जिससे घनघोर वर्षा का होना, तूफान आना, नदियों में सैलाव आना, समुद्र तट पर सुनामी लहरों का आना विनाश का द्योतक है। जून 2013 में उत्तराखण्ड के केदारनाथ में जल प्रलय वनों की कटाई का ही परिणाम है। वर्षों से वनों को राजस्व का प्रमुख स्रोत माना गया है परन्तु दीर्घकालीन लाभ के स्थान पर लघुकालीन लाभ के कारण वनों की कटाई अत्यधिक की जा रही है। सीमेंट, कंकरीट के जंगल बनाये जा रहे हैं जो प्राकृतिक असंतुलन बढ़ा रहे हैं तथा जीवन संकट में पड़ रहा है।

4. वनों के प्रकार

वन मनुष्य की सामाजिक, भौगोलिक, आर्थिक, पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान है। वन इन परिस्थितियों को समझने और उनसे आधारित लाभ को बनाये रखता है। वनों का जीवन में विशेष महत्व है जिसे कम नहीं कर सकते। सम्पूर्ण विश्व में छः प्रकार के वन पाये जाते हैं जो निम्नवत हैं–

1. शुष्क ट्रॉपिकल– वह वन क्षेत्र जहाँ की जलवायु शुष्क होती है जैसे– रेगिस्तान।
2. गीला ट्रॉपिकल– जहाँ की जलवायु में नमी होती है जैसे– पहाड़ों और समुन्द्रों के किनारे वाले भाग।
3. मोनताने सब ट्रॉपिकल– वह वन क्षेत्र जहाँ की जलवायु शुष्क और गीली होती है– जैसे– मैदानी भाग।
4. मोनताने टेम्परेट– वह वन क्षेत्र जहाँ की जलवायु चट्टानों के अनुरूप होती है जैसे– पठार।
5. एल्पाइन– वह वन क्षेत्र जहाँ की जलवायु पूर्ण रूपेण ठण्डी होती है जैसे– ऊँचे बर्फीले पहाड़।
6. सबएल्पाइन– वह वन क्षेत्र जहाँ की जलवायु आंशिक ठन्डी हो जैसे– बर्फीले पहाड़।

भारत में सभी प्रकार के वन पाये जाते हैं क्योंकि भिन्न–भिन्न स्थानों पर भारत की जलवायु विभिन्न प्रकार की होती है। भिन्न जलवायु में भिन्न प्रकार के पेड़ पौधे होते हैं तथा उनकी उपयोगिता भी विभिन्न होती है, परन्तु सभी वन आवश्यक हैं। कश्मीर में एल्पाइन, शिमला में सबएल्पाइन, नैनीताल में, गीला ट्रॉपिकल चेन्नई ओर कोलकाता में, शुष्क ट्रॉपिकल राजस्थान में, मोनताने सबट्रॉपिकल वन उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश व बिहार में पाये जाते हैं। यदि वनों की कटाई इसी प्रकार से होती रही तो प्रकृति का सामन्जस्य बिगड़ जायेगा जिसके प्रभाव से पर्यावरण प्रदूषित होगा और तापमान में वृद्धि व जलवायु में परिवर्तन होगा तथा वातावरण में पोल्यूटेंट की संख्या बढ़ जायेगी जिससे वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा कम हो जायेगी। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो विकास विनाश में परिवर्तित हो जायेगा। जीवाश्म की मात्रा कम होने से पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न होंगी जिसका स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव होगा।

5. भारत सरकार द्वारा वनों के प्रसार हेतु चलाये जा रहे कार्यक्रम

भारत में वनों का क्षेत्रफल बढ़ाने के लिए सरकार चिंतित है तथा उसने विभिन्न कार्यक्रम चला रखे हैं। जिससे वनों के क्षेत्रफल बढ़ेंगे। भारत में वनों की सुरक्षा के लिए 2006 से विभिन्न कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। जो इस प्रकार है–

1. नेशनल मिशन फॉर ग्रीन इन्डिया प्लान
2. नेशनल एक्शन प्लान फॉर क्लाईमेट चेन्ज (एन.ए.पी.सी.सी.)
3. नेशनल एनवायरनमेंट एवेयरनेस कम्पेनियन (एन.ई.ए.सी.)
4. नेशनल फॉरेस्टेशन एण्ड ईको डेवेलपमेंट (एन.ए.ई.डी.)
5. इन्टीग्रेटेड फॉरेस्ट प्रोटोकॉल स्कीम (आई.एफ.पी.एस.)
6. मिनिस्ट्री ऑफ एनवायरनमेंट एण्ड फॉरेस्ट (एम.ओ.ई.एफ.)

वर्षा ऋतु में वन विभाग हजारों पौधों को लगाते हैं। सही देखभाल न होने के कारण कुछ पौधे उग नहीं पाते जितना प्रयास किया जा रहा है उतना लाभ नहीं मिल रहा है परन्तु प्रयास जारी हैं। भूमाफिया भी सीमेंट–कंकरीट के जंगल उगाये जा रह हैं जिन पर सरकार को रोक लगानी चाहिये। जनता को जागरुक करके तथा सबके अथक प्रयासों से ही वनों का क्षेत्रफल बढ़ पायेगा।

6. निष्कर्ष

संयुक्त राष्ट्र संघ ने हानियों से बचने के लिए वनों के संरक्षण एवं वनों के क्षेत्रफल को बढ़ाने पर बल दिया है। मनुष्य का विकास तभी संभव है जब वनों का विकास संभव होगा। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2011 को अंतर्राष्ट्रीय वन वर्ष घोषित किया है। (**चित्र–1** में अंतर्राष्ट्रीय वन वर्ष का चिन्ह दिया गया है)[3] जिसमें अपेक्षा की गई है कि वनों के संरक्षण तथा क्षेत्रफल बढ़ाने के लिए कार्य किये जाने चाहिए। वन जीवन को संजोये रखते हैं, जीवन में उमंग, उल्लास, उत्साह, स्फूर्ती तभी आयेगी जब पर्यावरण शुद्ध होगा। यह तभी होगा जब वनों का क्षेत्रफल अधिक होगा। जीवन में आनन्द तभी आयेगा जब मन प्रफुल्लित होगा। सुख–सुविधाएँ होनी चाहिए, परन्तु विनाश पर आधारित न हो। वनों के क्षेत्रफल बढ़ने से जीवन में वैभव, सम्पन्नता प्राप्त होती है अन्यथा जीवन अभिशाप बन जाता है।

चित्र–1: अंतर्राष्ट्रीय वन वर्ष का प्रतीक चिन्ह

संदर्भ

1. https://www.glo-be.be/en/articles/12-reasons-why-forests-are-important
2. https://sciencing.com/the-effects-of-cutting-down-trees-on-the-ecosystem-12000334.html
3. https://www.un.org/esa/forests/outreach/international-day-of-forests/logo/index.html